शिक्षा मनोविज्ञान

(EDUCATIONAL PSYCHOLOGY)

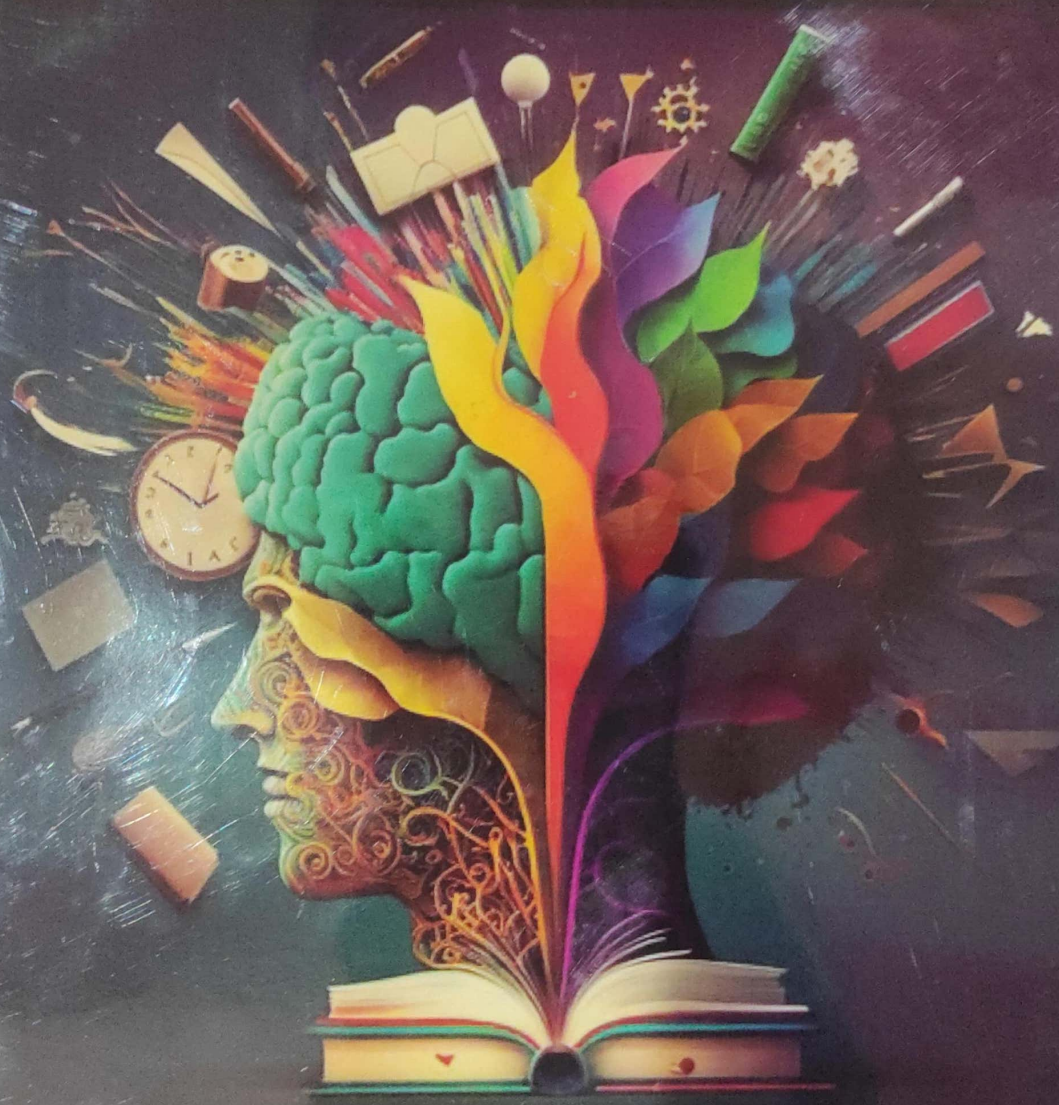

संपादक

प्रसादराव जामि

शिक्षा मनोविज्ञान ISBN 978-81-977256-4-7

अनुक्रमाणिका

क्र.	लेख का नाम /लेखक	पेज
1.	**शिक्षा मनोविज्ञान** प्रसादराव जामि	09
2.	**किशोरावस्था में बालक एवं बालिकाओं की आक्रामकता का तुलनातमक अध्ययन** पंकज कुमार सिन्हा	22
3.	**छात्र अध्यापकों के लिए शिक्षा मनोविज्ञान** V N V PADMAVATHI	27
4.	**आधुनिक युग की शिक्षण विधि** Dr. Latha Gowlikar	35
5.	**राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 और प्राथमिक शिक्षा** डॉ. सुधा शुक्ल	40
6.	**शिक्षा मनोविज्ञान** श्रीमती अरुणा अग्रवाल	44
7.	**वाइगोटस्की और विकास के सिद्धान्त** डॉ. भुपेन्द्र कौर, शिक्षाशास्त्र विभाग	45
8.	**संवेगात्मक रूप से अशान्त बालक** Dr. Hetalben Ganeshbhai Parmar	52
9.	**बच्चों में सोच एंव सीख** सावित्री जामि	58
10.	**शिक्षकों और शिक्षाविदों के लिए शैक्षिक मनोविज्ञान का महत्व** डॉ.अजय कुमार शर्मा	61
11.	**वर्तमान युग में शिक्षा मनोविज्ञान के शैक्षिक निहितार्थ का विशिष्ट अध्ययन** डॉ. सचिन व्यास	67
12.	**नयी शिक्षा नीति – 2020** प्रवीण कुमार जामि	74
13.	**NCF (एनसीएफ) - 2023** लक्ष्मी प्रसन्ना जामि	80
14.	**आदर्श समाज सृजन में परिवार और शिक्षालय की अहम भूमिका** डॉ. सुरेश लाल श्रीवास्तव	83
15.	**विकारग्रस्त व्यक्तित्व बहुत बड़ी सामाजिक चुनौती** डॉ. सुरेश लाल श्रीवास्तव	85
16.	**छात्रों में सृजनात्मक विकास में अध्यापक की भूमिका** मीनाक्षी सैनी	87
17.	**हिंदी साहित्य और मनोविज्ञान: समीक्षात्मक अध्ययन**	90

डॉ.आशीष कुमार तिवारी

18. **शिक्षा मनोविज्ञान के उद्देश्य और महत्त्व** 96
निराली बाबुभाई छाया, डॉ. मयुर वी. भम्मर

19. **शिक्षा मनोविज्ञान में अभिप्रेरणा का महत्व** 101
दिव्या कानजीभाई शियाणी, डॉ. मयुर वी. भम्मर

20. **शिक्षा मनोविज्ञान: अर्थ, प्रकृति, और कार्यक्षेत्र** 107
डॉ. मयुर वी. भम्मर

21. **शिक्षा मनोविज्ञान एवं अनुसंधान पर एक दृष्टि** 114
धनंजय कुमार गण

22. **प्रारंभिक शिक्षा में बाल मनोविज्ञान** 126
महेन्द्र प्रताप सिंह

23. **युवावस्था में समायोजन क्षमता का विकास** 129
डॉ. कमलेश कुमारी शर्मा

24. **शिक्षा मनोविज्ञान शास्त्र** 133
प्रसादराव जामि

25. **शिक्षा मनोविज्ञान** 143
सीमा सेखड़ी

26. **व्यक्तित्व** 144
योगेश तिवारी

27. **विशिष्ट बालकों के प्रकार, कारण एवं निवारण तथा उनकी शिक्षा** 146
प्रदीप कुमार मौर्य

28. **शिक्षा में अनुसंधान और मूल्यांकन की भूमिका** 162
सुरज कुमार

29. **बालकों का मनोविज्ञान एवं शिक्षा** 167
डॉ रश्मि बी वी

30. **शोध में नैतिकता** 170
डॉ. अजय कुमार, डॉ. महेन्द्र सिंह, श्री सुरेश कुमार पाण्डेय

31. **कला, साहित्य और संस्कृति में कलात्मक सृजन का मनोवैज्ञानिक प्रभाव और प्रेरणा** 173
डॉ. संदीप कुमार श्रीवास्तव

32. **Aims of Education** 178
Mr. Saroj Kumar Ojha

33. **The Role of Growth Mindset in Shaping Students' Futures: A Comprehensive Analysis** 183
Mr.Lingaraj Behera

34. **Using Educational Psychology to Design Effective Feedback Mechanisms in Learning** 189
Dr. Rajni Sharma

35. **Significance And Profound Influence Of Educational Psychology On Human Life** 196
D.P. Kori , Bharti Kori

36. **Empowering Tribal Youth: The Role of Educational Psychology** 198
Sangeeta Dhurvey

37. **Important Role of Teacher in Guidance and Counseling** 202
Dr. Priyanka Pandey

38. **Care and importance of early childhood Care and Education at the Foundational Stage** 206
Mr Saroj Kumar Ojha

39. **The Implication of Artificial Intelligence in Educational Psychology: A Conceptual Study** 215
Paresh Garai

40. **Educational Psychology: A Tool For English Language Teaching** 222
Dr. Bipin Bihari Dash

41. **The Path to Success: Educational Psychology's Impact on Student Development** 229
C.V. Malarvarsa

42. **Educational Psychology in Vernacular Times: Taking Lessons from Different Cultures** 241
Shweta Suhane

43. **Educational Psychology** 246
Neelam Bhalla

44. **Educational Psychology in Action: Strategies for English Language Teachers** 247
Dr. Nirmla.S. Padmawat

45. **Motivation Matters: Applying Theories of Motivation to Enhance Student Learning** 251
Ms. Sanjna Gulia

46. **Bridging Academic and Emotional Worlds in Higher Education** 258
Dr. Garima Hariniwas Tiwari

47. **The Role of Educational Psychology in Shaping Human Personality** 262
Dr. Satish Kumar Tripathi

7

वाइगोटस्की और विकास के सिद्धान्त
VYGOTSKY AND THEORY OF DEVELOPMENT

डॉ. भुपेन्द्र कौर, शिक्षाशास्त्र विभाग
आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद (यू0पी0)

प्रस्तावना (Introduction)–उसने पियाजे द्वारा प्रतिपादित संज्ञानात्मक के विकास के सिद्धान्त और उसकी अवस्थाओं का समर्थन तो किया परन्तु वह पियाजे द्वारा संज्ञानात्मक विकास के सिद्धान्त में बालक के सामाजिक तथा सांस्कृतिक वातावरण को महत्त्व न दिये जाने से असहमत थे। वाइगोटस्की ने अपने द्वारा प्रतिपादित नही सेसेज्ञानात्मक सिद्धान्त में बालक के सामाजिक तथा सास्कृतिक (Sociological and Cultural) कारकों एवं भाषा को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। इसलिए उसके संज्ञानात्मक विकास के सिद्धान्त को सामाजिक–सास्कृतिक (Socio-cultural Theiry of Cognitive Development) नाम से भी जाना जाता है। उसका मानना है कि बच्चे वाहे जिस आयु के हों उनके संज्ञानात्मक विकास में उपयुक्त सामाजिक तथा सांस्कृतिक सूचनाओं का योगदान अवश्य रहता है। अतः उपके संज्ञानात्मक विकास अन्तर्वैयक्तिक सामाजिक सन्दर्भ (Interpersonal Social Context) में सम्पन्न होता है। वह ज्ञान के स्थानातरण के सर्वोच्च सिद्धान्त का प्रतिपादन करना चाहते थे लेकिन उससे पहले ही उनकी मृत्यु हो गई। इन्होने संज्ञानात्मक विकास में जो कि इनके सिद्धान्त का एक महत्वपूर्ण प्रकार है, उसको काफी योगदान दिया। इनको विश्वास था कि बालकों का चिन्तन उनके सामाजिक ज्ञान पर निर्भर करता है। जो कि मनोवैज्ञानिक (भाषा, अंक और कला) तथा तकनीकी (किताबें, कैलकूलेटर) आदि यन्त्रों द्वारा सम्भावित होता है।

वाइगोटस्की का जीवन (Life of VYGOTSKY)–इनका पूरा नाम लेव वाइगोटस्की (Lev Vygotsky) है। इनका जन्म 1896 ओरसा में सोवियत संघ (जो भाग बेलारस के नाम से जाना जाता है) में हुआ था। वाइगोटस्की ने 1917 में मैस्को स्टेट यूनिवर्सिटी से ग्रेजुएशन किया। सन् 1934 में 37 वर्ष की अल्प आयु में इनकी मृत्यु हो गई। इनकी थ्योरी को भी पियाजे और ब्रूनर की थ्योरी के समान मूल्यवान माना जाता है।

वाइगोटस्की का संज्ञानात्मक विकास का सिद्धान्त
VYGOTSKY AND COGNITIVE DEVELOPMENT THEORY

वाइगोटस्की का विश्वास था कि बालकों का चिन्तन उनके सामाजिक समुदाय के ज्ञान से प्रभावित होता है जो कि या तो तकनीकी या मनोवैज्ञानिक सांस्कृतिक यन्त्रों द्वारा सीखा गया होता है।

वाइगोटस्की ने यह भी बताया कि भाषा एक बहुत महत्वपूर्ण यन्त्र है जिससे सामाजिक ज्ञान को प्राप्त किया जा सकता है बच्चा भाषा के द्वारा ही अन्य व्यक्तियों से सीखता है। इन्होने बुद्धि को परिभाषित किया कि–"अनुदेशन द्वारा सीखने की क्षमता"

"The Capacity to learn from instruction."

इन्होंने इस तथ्य पर जोर दिया कि इसके लिए अधिक ज्ञानवान अन्य व्यक्ति या शिक्षक (विशेषज्ञ) (More Knowledgeable other) की आवश्यकता होती है।

विशेषज्ञ की आवश्यकता–विशेषज्ञ का अर्थ है स्वयं में ही निहित कि वह व्यक्ति जो ज्ञानवान हो, उच्च योग्यता का स्तर रखता हो, किसी विशेष कार्य के सम्बन्ध में, प्रक्रिया में या प्रत्यय में उसे विशेषज्ञ की संज्ञा दी जा सकती है। विशेषज्ञ एक शिक्षक भी हो सकता है और कोई प्रौढ व्यक्ति (Older Adult) भी हो सकता है। बहुधा हम देख सकते है कि एक बच्चे का साथी समूह (Peer group) या उस बच्चे से बडे बच्चे भी अधिक ज्ञानवान या अधिक अनुभव रख सकते है जो उसकी सिखने में सहायता करते हैं। वाइगोटस्की पूर्णताः विश्वास करते थे कि बालक के संज्ञानात्मक विकास के लिए समुदाय एक केन्द्रीय

भूमिका निभाता है। जबकि प्याजे का मानना था कि बालक का विकास उसके आत्मकेन्द्रित सीखने पर निर्भर करता है।

इस सिद्धान्त में यह भी तथ्य है कि MKM में आवश्यक नहीं कि इसमें सीखने वाले की अपेक्षा सिखाने वाला अधिक ज्ञान व विशेषज्ञता अवश्य रखता है। यह विशेष कार्य, प्रत्यय या क्रिया में हो सकती है। इसके लिए हम एक उदाहरण देख सकते हैं कि एक बालिका जानना चाहती है कि कुकीज कैसे बेक किए जाते हैं। तब वह निणर्य लेती है कि विशेषज्ञ की श्रेणी में आने वाले सभी लोगों से वह कैसे पूछेगी कि कुकीज कैसे बेक किए जाते हैं? सबसे पहले वह अपनी माता से पूछेती है, इसके बाद अपने दोस्तों से पूछती है, उसके बाद निर्णय लेती है कि वह अपने अध्यानक से पूछेगी, और बाद में कम्प्यूटर के द्वारा भी जानेगी। इन यब पदों को प्रयोग काके वह योग्य हो जाती है कि वह स्वयं कुकीज को बना सके–इस प्रत्यय का सृजन Yun-Shuarg charg, ltiliary Johnson, and yi-Wen Tan (2005) ने दिया।

वाइगोस्टकी की मान्यताएँ–वाइगोटस्की के संज्ञानात्मक विकास थ्योरी मे निम्नलिखित तीन मान्यताओं का वर्णन की किया गया है–

(1) बालक की ज्ञानवादी कुशलताएँ केवल उस समय समझी जा सकती है जबकि वह विकासात्मक रूप में विष्लेषित की जाती है और उनकी व्याख्या की जाती है।

(2) ज्ञानवादी कुशलताएँ शब्दों, भाषा एवं संवाद के माध्यम से परिलक्षित होती है, जो कि मनोवैज्ञानिक यन्त्रों की भाँति कार्य करती है मानसिक क्रियाओं को सुविधाजनक बनाने में तथा उन्हें परिवर्तित करने में सहायता करती है।

(3) ज्ञानात्मक कुशलताओं की उत्पत्ति सामाजिक सम्बध्धों में होती है और यह सामाजिक सांस्कृतिक, पृष्ठभूमि में अन्तर्निहित होती है।

वाइगोटस्की के अनूसार बालक के ज्ञानात्मक कार्य समझे जा सकते है उनकी उत्पत्ति का परीक्षण करके जो की परीक्षण से पहले तथा पश्चात् में परिवर्तनशीलता का निरीक्षण करके किया जाता है।

वाइगोटस्की की दूसरी मान्यता है कि ज्ञानात्मक कृत्य को समझने के लिए यह आवश्यक है कि उन यन्त्रों का परीक्षण करें जो कि इसकी मध्यस्थता करते हैं और इसे रूप देते हैं। यह विश्वास दिलाया कि भाषा इनमें सबसें महत्वपूर्ण यन्त्र है।

उनके अनुसार प्रारम्भिक बाल्यपन में भाषा का प्रयोग एक यन्त्र की भाँति होता है जो बालक को उसकी क्रियाओं की योजना बनाने और समस्याएँ हल करने में सहायता देती है।

वाइगोटस्की की तीसरी मान्यता यह थी कि ज्ञानात्मक कुशलताएँ सामाजिक सम्बन्धों में और संस्कृतिक में उत्पन्न होती हैं। वाइगोटस्की के दृष्टिकोण में बालक का विकास सामाजिक और संस्कृतिक क्रियाओं से विलग नही किया जा सकता।

उन्होने इस बात पर बल दिया कि स्मृति का विकास अवधान एवं तर्क में सन्निहित है। समाज के अन्वेषणों का प्रयोग करना सीखना, जैसे कि भाषा, गणित आदि। हमारी संस्कृति में उगलियों के द्वारा गिनना आम है जबकि पाश्चात्य देशों में गणक (Calculators) का अधिक प्रयोग होता है।

वाइगोटस्की के दृष्टिकोण ने हमें यह विश्वास दिलाया है कि व्यक्तियों में तथा वातावरणों में ज्ञान का वितरण होता है। इसमें वस्तुएँ, शिल्पकृतियाँ, यन्त्र, पुस्तके तथा वह समुदाय जिसमें व्यक्ति रहते है आदि आते है। एक व्यक्ति का ज्ञान उचित तरह से उस समय प्रगति की ओर अग्रसर होता है जब उसकी अन्य व्यक्तियों के साथ सहयोगी क्रियाएँ होती हैं।

वाइगोटस्की और सामाजिक–सांस्कृतिक विकास का सिद्धान्त

वाइगोटस्की ने अद्वितीय एवं प्रभावशाली विचार सीखने और विकास के सम्बन्धों के बारे में प्रस्तुत किए हैं। वाइगोटस्की के विचार स्पष्ट रूप से इस बात पर बल देते है कि ज्ञानात्मक कृत्य सामाजिक स्त्रोत हैं।

समीपस्थ विकास का मण्डल (Zone of Proximal Development) (ZPD)– वाइगोटस्की ने अपने अद्वितीय विचारों को अपनी समीपसथ विकास के मण्डल की धारणा में प्रस्तुत किया है। वाइगोटस्की का मानना है कि ZPD को प्राप्त करने के लिए दो स्तर हैं–

स्तर 1–'विकास का वर्तमान स्तर' (Present level of development) जो बताता है कि बालक बिना किसी अन्य की सहायता के कार्य को करने में सक्षम है।

स्तर 2–विकास का कुशलता स्तर (Potential level of development) जो बताता है कि बालक किसी अन्य व्यक्ति या शिक्षक की सहायता से कार्य करने की क्षमता में वृद्धि कर सकती है।

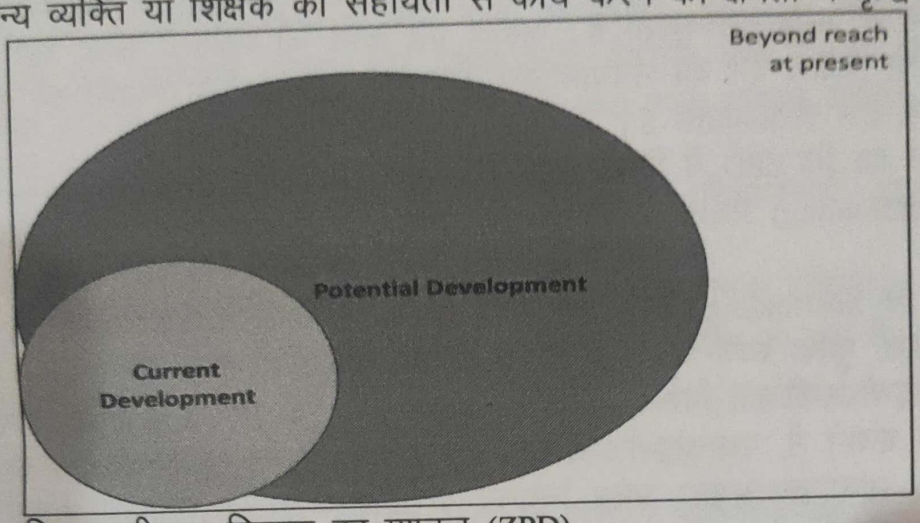

चित्र–समीपस्थ विकास का मण्डल (ZPD)

स्तर–1 और स्तर–2 में यह अन्तर ही वाइगोटस्की के अनुसार समीपस्थ विकास का मण्डल (ZPD) है।

उसने प्रस्तुत किया कि जब भी बालक एक नई कुशलता सीख रहा है या एक नई समस्या हल कर रहा होता है तो उसे यदि एक विशेषज्ञ का साथ या सहायता मिल जाती है तो वह कार्य निष्पादन बहुत अच्छे से कर सकता है। यद्यपि यह विशेषज्ञ की बराबरी का नही होगा। एक खिलाडी पहले से अच्छा खेल सकता है यदि उसे खेलने में विशेषज्ञ का सहयोग मिल जाए। वाइगोटस्की ने उस विभेद को जो अकेले निष्पादन करने में तथा सहयोग से निष्पादन करने में दिखाई पडता है उसे समीपस्थ विकास का मण्डल (ZPD) कहा जाता है–(Tharp & Gallimore, 1991)।

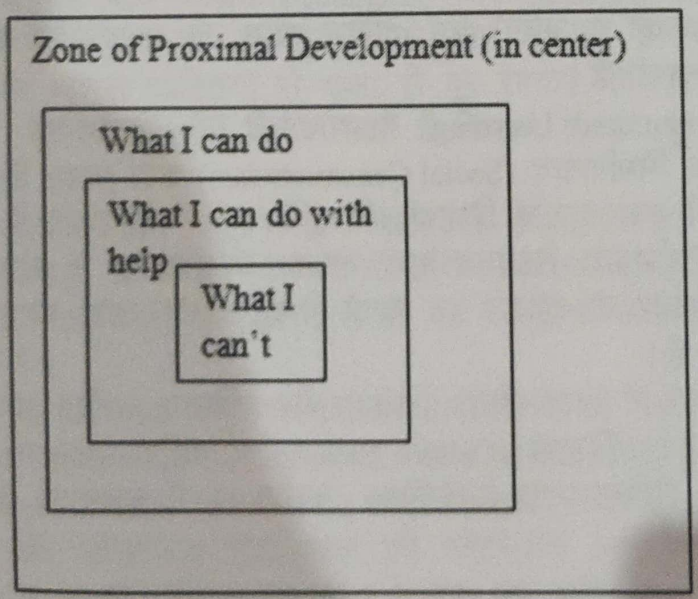

आरम्भ में सीखने के समय ज्ञान या कुशलता, अधिकतर विशेषज्ञ में पाया जाता है यदि विशेषज्ञ कुशल है और सहायता देने के लिए अनुप्रेरित है तो चह अनुभवों का आयोजन इस प्रकार करेगी कि नए सीखने

वाले को महत्वपूर्ण कुशलताओं का अभ्यास करने या नए ज्ञान की संरचना करने में सहयोग देगा इसलिए ZPD की निचली सीमा वह है जिस स्तर पर बालक बिना सहायता के समस्या के हल तक पहुँच सकता है। उच्चतम सीमा वह स्तर है जिस तक बालक योग्य शिक्षक की सहायता के साथ और अधिक उत्तरदायित्व स्वीकार कर सकता है।

उत्तरोत्तर विकास के अवसर (Scaffolding)–इसका वर्णन एक ऐसी तकनीकों की भाँति किया जा सकता है जो सहायता के स्तर में परिवर्तन लाने की है। एक शिक्षण के सत्र में एक अधिक कुशल व्यक्ति (शिक्षक अथवा अधिक प्रगति किया हुआ बालक का सहपाठी) निर्देशन की मात्रा में विद्यार्थी के उस समय के निष्पादन के स्तर के साथ अनुकूलन करता है। जबकि वह कार्य जो विद्यार्थी सीख रहा है नया होता है अधिक कुशल व्यक्ति सीधे शिक्षण देने का उपयोग कर सकता है। जैस–जैसे विद्यार्थी की कुशलता बढती जाती है। निर्देशन का स्तर कम होता जाता है।

वाइगोटस्की का विश्वास था कि ZPD में किसी कार्य में अचित सहायता (Appropriate Assistance) उत्तरोत्तर विकास के अवसर (Scaffolding) प्रदान करता है। जो कि छात्र को कार्य पूरा करने में बढावा "Boost"–देता है।

अतः हम कह सकते है कि Scaffolding किसी एक छात्र को उसके कार्य में कुशलता प्रदान करना जिससे वह अपने कार्य को कुशलता पूर्वक स्वयं करने की योग्यता प्राप्त कर ले।

भाषा और विचार –वाइगोटस्की का विश्वास था कि बालक भाषा का प्रयोग न केवल सामाजिक सम्प्रेषण में करते है वरन् योजना बनाने में, पथ–प्रदर्शन में तथा अपने व्यवहार का आकलन करने में आत्म नियमन के रूप में भी करते हैं। भाषा का प्रयोग आत्म नियमन के लिए आन्तरिक भाषा या निजी भाषा कहा जाता है। प्याजे का मत था कि निजी वाणी अहं केन्द्रित और अपरिपक्व होती है, किन्तु वाइगोटस्की के अनुसार प्रारम्भिक बाल्यापन के वर्षो में यह एक महत्वपूर्ण यन्त्र विचार हेतु है (Santrok, 2004)।

वाइगोटस्की के विचार में भाषा और विचार प्रारम्भ में एक–दूसरे से स्वतन्त्र रूप से विकसित होते हैं और फिर और फिर एक–दूसरे से मिलते हैं। उसके अनुसार सब मानसिक कृत्यों की बाहरीया सामाजिक उत्पत्ति होती है। बालकों को एक–दूसरे के साथ सम्प्रेषण करने के लिए भाषा का प्रयोग करना चाहिए इससे पहले कि वह अपना ध्यान अन्दर की ओर अथवा अपने निजी विचारों की ओर केन्द्रित करें। बालकों को प्रथम बाह्यः रूप से सम्प्रेषण करना चाहिए और भाषा का उपयोग लम्बे काल तक करना चाहिए जिससे पहले कि बाह्यः से आन्तरिक वाणी की ओर बदलाव आ जाये। यह परिवर्तन तीन से सात वर्ष की आयु के बीच होता है और इसमें अपने स्वंय से बातचीत भी शामिल होती है। कुछ समय बाद अपने अपने स्वंय से बातचीत बालक की दूसरी प्रकृति बन जाती है और वह बिना शब्दों का प्रयोग किये कार्य कर सकते हैं। जब यह पूर्ण होता है तों माना जाता है कि बालकों ने अपनी अहं केन्द्रित भाषा को अन्तर्निहित का लिया होता है, आन्तरिक वाणी जो उनका विचार बन जाती है।

निर्माणवाद एवं सीखना (Constructivism and Learning) वाइगोटस्की के निर्माणवाद सिद्धान्त (Constructivism theory) को अधिकतर सामाजिक निर्माणवाद (Social Constructivism) कहा जाता है।

इस सिद्धान्त के अनुसार अध्यापक को एक कुशल शिक्षक की भूमिका निभानी होती है कि वह क्रियाशील रहे। वाइगोटस्की का सामाजिक निर्माणवाद सिद्धान्त एक बालक के विकास में संज्ञानात्मक यन्त्रों को आधार मानता है। ये यन्त्र गुणों व प्रकार के आधार पर प्याजे सिद्धान्त से ज्यादा महत्वपूर्ण हैं, जो विकास की दिशा स्तर आदि निर्धारित करते हैं।

संस्कृति के इन यन्त्रों को निर्धारित करने में माता–पिता, शिक्षक और प्रशिक्षक व्यक्ति आदि आते है। संस्कृति के ये यन्त्र बालक को संस्कृति का इतिहास (Culture History), सामाजिक सन्दर्भ (Social Context) और भाषा (Language) आदि आते है। लेकिन आज सामाजिक निर्माणवाद में सूचनाओं को प्राप्त करने के लिए इलैक्ट्रॉनिक सुविधाएँ भी आ चुकी हैं।

सामाजिक निर्माणवाद के सामान्य निहितार्थ
(GENERAL IMPLICATIONS OF SOCIAL CONSTRUCTIVISM)

वाइगोटस्की के अनुसार एक निर्माणवादी शिक्षक सीखने के लिए ऐसे वातावरण का सृजन करता है जिसमें विद्यार्थी रूचिपूर्ण क्रियाओं को करने के लिए प्रेरित हो सकता है। इसमें अध्यापक केवल एक दर्शक की भाँति ही नहीं जिसमें वह बालकों को खोज करने व आगे बढने को प्रेरणा दे, बल्कि वह साथ ही उन्हें कभी–कभी समस्याओं का निवारण करने की विधियों का निर्देश देने, कार्य को समूह में करने के लिए प्रेरणा देने, उन्हें वास्तविक जीवन में आने वाली समस्याओं, चुनौतियाँ आदि के लिए सलाह देने तथा साथ ही कार्य को कैसे रूचिपूर्ण बनाकर पूर्ण किया जाए, जिससे उन्हें सन्तोष प्राप्त हो इसकी प्रेरणा देता है। अतः शिक्षक बालक के समुदाय में उसके सहयोगी तथा अन्य कुशल व्यक्ति द्वारा उसके ज्ञानात्मक विकास और सीखने के वातावरण का सृजन करता है।

किसी भी वाइगोस्टकीयन कक्षा में सामाजिक निर्माणवादी उपागम (Social Constructivism Approach) का प्रयोग चार सिद्धान्तों पर आधारित है–

1. सीखना और विकास सामाजिक परिप्रेक्ष्य में, सहयोगात्मक प्रक्रिया।
2. पाठ–योजना और पाठ्यक्रम के लिए (ZPD) एक निर्देश के रूप में।
3. विद्यालय में सीखने की प्रक्रिया अर्थपूर्ण सन्दर्भ में हो और बालकों का अधिगम और ज्ञान उनके 'वास्तविक जीवन' (real world) से अलग नही होना चाहिए।
4. विद्यालय के बाहर के अनुभव (Out of School experiences) बालक के विद्यालय के अनुभव से सम्बन्धित होने चाहिए।

सामाजिक निर्माणवाद के अनुदे□ान के प्रकार
(TYPES OF INDTRUCTION OF SOCIAL CINSTRUCTIVESM)

कक्षा हेतु सामाजिक निर्माणवाद का वातावरण पैदा करने के लिए तकनीकी आवश्यक यन्त्र या साधन (Tools) प्रस्तुत करती है।

सूचना प्रौद्योगिकी के कुछ उदाहरण नीचे दिए जा रहे है। जो कक्षा में सामाजिक निर्माणवाद का वातावरण शिक्षण और अधिगम में सहयोग दे सकता है।

दूरसंचार (Telecommunications) के यन्त्रों में जैसे–ई–मेल और इन्टरनेट जो कि इन साधनों को प्रस्तुत करता है जैसे–संवाद (Dialogue), वाद (Duscussion) और विवाद (Debate)–इन अन्तक्रियाओं से सामाजिक निर्माणवाद का उददेश्य अपने आप ही पूर्ण हो जाता है। इसमें विद्यार्थी दूसरे विद्यार्थियों से, शिक्षकों और कुशल व्यक्तियों से कक्षा से दूर रहकर भी संवाद कर सकते है दूर संचार के ये यन्त्र छात्रों की बहुत तरह की सूचनाएँ प्रदान करते हैं जिससे वे एक दूसरें की संस्कृति व अन्य लोगों की संस्कृति के बारें में जान सकते हैं।

प्रसारित होने वाले लेखन कार्यक्रम–सहयोगात्मक लेखन के लिए एक अदभुत मंच (Unique Platform) प्रस्तुत करते हैं। विद्यार्थी वास्तविक श्रोताओं (real audiences) के लिए लिख सकता है–जिसकी तुरन्त प्रतिक्रिया मिलती है और साथ ही वह सामूहिक लेखन (Collective writing) में सक्रिय रूप से भाग ले सकता है।

एक अध्यापक अनुकरण शिक्षण द्वारा छात्रों को सिखाने के लिए अर्थपूर्ण परिस्थिति बना सकता है। विशेषतः वास्तविक जीवन (Real world) से सम्वन्धित करते हुए उन्हें जैसे–नाभकीय शक्ति संयन्त्र (Nuclear Power Plant), समाचार पत्र के लिए कहानी आदि लिखना, प्रदूषण की समस्याओं का निवारण आदि अनेक क्रियाओं द्वारा सामाजिक निर्माणवाद की परिस्थिति बना सकता है। जिससे छात्र सामाजिक वातावरण में सहयोग द्वारा अपने अधिगम का स्वयं निर्माण कर सके।

वाइगोटस्की के सिद्धान्त का शिक्षण में प्रयोग
(APPLICATION OF THEORY OF VYGOTSKY IN TEACHING)

वाइगोटस्की की कक्षा इस बात पर जोर देती है कि ही एक छात्र अपने प्रत्यक्ष का निर्माण करे तथा अपने ज्ञान को निर्मित करे। छात्र कक्षा में ज्ञान को वास्तविक जीवन से सम्बन्धित करके अर्थपूर्ण ढंग से सीखता है। वाइगोस्टकीयन कक्षा इस बात पर जोर देतह है कि शिक्षक–छात्र और छात्र–छात्र के बीच अन्तक्रिया द्वारा खोज पैदा होती है। कुछ ज्ञानात्मक तकनीकी का प्रयोग समूह के सदस्य प्रयोग कर सकते हैं जैसे–प्रश्नोत्तर तकनीकें, संश्लेषण, विश्लेषण, पूर्वकथन आदि।

वाइगोस्टकीयन कक्षा में अधिगमकर्ता की आवश्यकता के अनुसार उसे उचित निर्देश दिया जाता है लेकिन इसमें अधिगमकर्ता की इच्छा पर भी निर्भर करता है कि उनका सहयोग किया जाए न कि बल पूर्वक उनकों निर्देश दिए जाए।

इस कक्षा में छात्रों को ज्ञानात्मक विकास करने के लिए अवसर दिए जाते हैं। जैसे–वाद–विवाद, अनुसन्धान सहयोग, इलैक्टोनिक सूचना के स्त्रोत और प्रोजेक्ट समूह आदि के द्वारा समस्याओं का विश्लेषण किया जाता है।

(1) यह सिद्धान्त शिक्षण एवं अधिगम) के क्षेत्र में बच्चों की सक्रियता पर बल देता है।

(2) वाइगोटस्की बालकों की अधिगम क्षमताओं को अध्यापक तथा माता–पिता द्वारा पारस्परिक शिक्षण के द्वारा विकसित करने पर विशेष बल देते हैं।

(3) वे बच्चे के संज्ञानात्मक विकास में भाषा को एक महत्वपूर्ण साधन मानते है उनके अनुसार भाषा छात्रों की अधिगम–क्षमताओं को विकसित करने का सर्वोत्तम साधन है।

(4) विभिन्न अध्ययनों द्वारा पता चला है कि अकेले सीखने की अपेक्षा व्यस्क तथा अनुभवी लोगों के सम्पर्क में रहकर अन्तःक्रिया द्वारा सीखना अधिक लाभप्रद है।

वाइगोस्टकी का सिद्धान्त
(THEORY OF VYGOTSKY)

1. भाषा अधिगम और चिन्तन के विकास में गहरा सम्बन्ध।
2. बुद्धि के विकास को प्रभाहवत करने वाले सामाजिक और सांस्कृतिक तत्व।
3. समीपस्थ विकास का मण्डल यह वह (Magic) मण्डल है जिसमें अधिगमकर्ता वास्तव में जानता है और जो वह कुशल व्यक्ति द्वारा सीखकर अपनी क्षमता को बढाता है। जैसे–

   (क) बालकों एवं अन्य कुशल व्यक्तियों के बीच अन्तक्रिया होने पर उच्च मानसिक क्रियाओं का विकास

   (ख) सामाजिक अनुभवों का इतिहास (History of Social Experience) और सांस्कृतिक यन्त्र (Cultural Tools) ये दोनों विचार शक्ति के विकास में बेहद महत्वपूर्ण है।

वाइगोस्टकी के सिद्धान्त का मूल्यांकन या आलोचनाएँ
(EVALUTION OR CRITICISM OF VYGOTSKY THEORY)

वाइगोस्टकी ने बालक का संज्ञानात्मक विकास में सामाजिक सन्दर्भ पर विशेष ध्यान दिया है जिसमें उसके साथियों तथा व्यस्क लोगों का विशेष योगदान रहता है। उसके अनुसार, किसी संस्कृति की विशेष तथा सामाजिक संस्थाएँ बालक के सीखने तथा चिन्तन को प्रभावित करती है, लेकिन उसका सिद्धान्त प्याजे की तरह प्रामाणिक परीक्षणों द्वारा किए गए अनुसंधानों पर आधारित नहीं हैं। अतः इस सिद्धान्त का शोध अध्ययनों द्वारा परीक्षित करने की आवश्यकता है।

1. वाइगोस्टकी का सिद्धान्त सामान्य तथ्य प्रस्तुत करता है। वे अपने सिद्धान्त में कुछ परिवर्तन या और गहन वर्णन देते उससे पहले ही उनकी मृत्यु हो गई थी।

2. इन्होंने संज्ञानात्मक प्रक्रिया का वर्णन नहीं किया है जों कि बालक के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

3. इन्होंने संस्कृति और सामाजिक प्रक्रिया को बहुत अधिक महत्व दिया है और संज्ञानात्मक विकास से सम्बन्धित अन्य विधियों व सम्भावनाओं पर ध्यान नही दिया है।

निष्कर्ष (Conclusion)

वाइगोस्टकी ने संज्ञानात्मक विकास में शिक्षक की भूमिका को महत्वपूर्ण माना जाता है तथा इस प्रक्रिया में अन्य अधिक ज्ञानवान लोगों का भी सहयोग लिया जा सकता है। पाइंट (Scaffolding) सम्भावित संज्ञानात्मक विकास के स्तर तक पहुँचने का रास्ता प्रदान करता है। उसके अनुसार, सामाजिक सांस्कृतिक कारक (Factors) तथा भाषा वे साधन है जो बालक के संज्ञानात्मक विकास में महत्वपूर्ण योगदान देते है।

सन्दर्भ ग्रन्थ–

भार्गव विवके, बाबू अनिल, (2017),राखी प्रकाशन प्रकाशन प्रा. लि. आगरा।
सिंह, बी0 पी0 एवं सिंह, ओमपाल (2004), शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का विकास, मेरठ : लायल बुक डिपो।
सारस्वत, कुलदीप एवं अबरोल, मोनिका (2015), सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में संज्ञान तथा अधिगम, आगरा : हरप्रसाद इन्स्टीट्यूट ऑफ विहेवियर स्टडीज।